# एक दुनिया समांतर

सैयद एस. तौहीद

लेख

# एक दुनिया समानांतर

सैयद एस. तौहीद

# अपनी बात

सिनेमा का इतिहास उसे सभी स्थितियों में एक रूचिपूर्ण बनाता है। इस नजर से चलती तस्वीरों का सफर एक घटनाक्रम की तरह सामने आता है। इस संदर्भ में सिनेमा का शिल्प तकनीकी ज्ञान से अधिक समय द्वारा निर्धारित होना चाहिए। किंतु मनोरंजन के फेर गंभीर सामयिक सरोकार हाशिए पर चले जाते हैं। मनोरंजन की मुराद दरअसल व्यक्तिगत होकर रह गई है।

ग्लोबल सिनेमा में हिन्दी सिनेमा का बडा हिस्सा आता है। फिल्मों की संख्या एवं राष्ट्रीय फिल्म बाजार आधार पर ऐसा कहा जा सकता है। सिनेमा के इतिहास को मुडकर देखने पर फिल्मो की एक आकर्षक दुनिया से वास्ता होगा। नायक-नायिका ही नहीं और लोग भी मिलेंगे। दरअसल सिनेमा में उन सबकी बात की जानी चाहिए जिनकी फनकारी फिल्म विधा को जीवित रखती है। कह सकते हैं कि फिल्म-मेकिंग तकनीक खोज से लेकर उसके दिलचस्प इस्तेमाल में इंसानी क़ुव्वत काम कर गई। एक टीम वर्क होने की वजह से फिल्म में हरेक यूनिट की भागीदारी मायने रखती है। किसी आईडिया को विकसित करने में यह लोग बड़ी शिद्दत से जुटे रहते हैं।

समय के साथ बहते हुए फिल्मों की दुनिया का बड़ा हिस्सा गुजरा दौर हो जाता है। बीता वक्त वर्त्तमान व भविष्य का एक संदर्भ ग्रंथ है। सिनेमा की मुकम्मल संकल्पना अतीत से अब तक के समय में समाहित है। हिंदी फिल्मों का कल और आज अनेक भूली-बिसरी कहानियों को संग्रहित किए हुए है। तस्वीरों की कहानी के भीतर कई कहानियां हैं। हिंदी फिल्म सितारों की रोचक कहानियां हैं। हिंदी सिनेमा की तक़दीर में इनका योगदान बीते वक्त की बात होकर भी विमर्श का विषय है। यह शख्सियतें कभी न कभी फिल्म उद्योग के एक्टिव कर्मयोगी रहे। कलाकारों व तकनीशियनो के दम पर यह उद्योग संचालित है।

यह पुस्तक सिनेमा को लेकर जुनून अथवा जादुई असर से अधिक सिने तहजीब का आईना प्रस्तुत करने का मकसद लेकर चली है। सिनेमा के तलबगारों के लिए नेक नीयती से लिखी गई पुस्तक।

(सैयद एस. तौहीद)

# अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| 1. | REVIEW: GANDHI (world cinema) | 4 |
| 2. | बिमल राय सरीखा फिल्मकार मर सकता है ! | 7 |
| 3. | शहर-ए-सिनेमा से अक़ीदत और तहजीब का एक किरदार चला गया! | 11 |
| 4. | सौ साल जीएं दिलीप कुमार | 13 |
| 5. | बड़ी मुश्किल से दिल की बेक़रारी को क़रार आया | 18 |
| 6. | काबुलीवाला | 21 |
| 7. | पीके फिल्म की समीक्षा | 26 |
| 8. | फिल्म एक्शन जैक्सन की समीक्षा | 28 |
| 9. | मिथालांचल का सिनेमा तरक्की कर नहीं सका | 30 |
| 10. | कोमल मनोभावों की हत्या सेक्सुआलिटी का विकृत रुप | 32 |
| 11. | REVIEW: White Balloon (World Cinema) | 34 |
| 12. | REVIEW: दिलवाले | 38 |
| 13. | हमारी ज़ोहरा आपा | 40 |
| 14. | जिंदगी को 'अनुराग' से जीने की दुआ | 44 |
| 15. | दादा साहेब फ़ाल्के (Father of Indian Cinema) | 46 |
| 16. | Review: गुलाल | 50 |
| 17. | आप बांबे सहगल को जानते हैं? | 54 |
| 18. | Review: फुटपाथ | 57 |
| 19. | हिन्दी सिनेमा में साहित्य: धूप छांव का रिश्ता | 66 |
| 20. | पुनर्जागरण में आस्था :पटना में भोजपुरी फिल्म फेस्टिवल | 69 |
| 21. | भोजपुरी सिनेमा पर एक किताब | 72 |
| 22. | इंसान मिटटी से बना है, शैतान आग से | 76 |
| 23. | ख्वाजा अहमद अब्बास की यादें | 83 |
| 24. | Review: बदलापुर ब्याज | 86 |
| 25. | पटना सिने परिवेश | 88 |
| 26. | अपने हाथों की कमाई हुई सुखी रोटी भी… | 92 |
| 27. | शहीद एक प्रेरक चरित्र | 95 |

28. Review: प्रेम रतन धन पायो 99
29. इंसानी रिश्तों का अनोखापन ‘पीकू’ 101
30. बुजुर्गों की अहमियत का संदेश 'रूई का बोझ' 103
31. ऋत्विक घटक का सिनेमा और 'मेघे ढाका तारा' 106
32. ना जाने क्यूं होता है, यह ज़िंदगी के साथ ! 107

# REVIEW: GANDHI (world cinema)

*फिल्म का बनना एटनबरो की मुहब्बत की विजय भी थी*

इस महाकाव्यात्मक फिल्म में पेश आया छोटा सा दृश्य आपको 'गांधी' फिल्म की अदभुत क्षमता समझने में बड़ा सहायक होगा। मकबूलियत के शिखर पर खडे महात्मा गांधी पश्चिम से आए अजनबी आगंतुक के अनुरोध पर विवाह की याद को जीवंत करते हैं। एक शांत झील के तट पर मोहनदास-कस्तुरबा विवाह समय ली जाने वाली कसमों को फिर से जिंदा कर पुरानी दिनों में चले जाते हैं। भारतीय रीति-रिवाज में पति-पत्नि के बीच जीने-मरने की कसम विवाह का एक सुंदर पक्ष होता है। रस्म के पूरा होने पर मोहनदास मुस्काते हुए कहते हैं 'उस वक्त हम तेरह के थे'। मोहनदास-कस्तुरबा शादी से पहले एक दूसरे को नहीं मिले थे। वो एक अरेंज मेरिज थी। रीति-रिवाज के साथ विवाह हुआ था। कस्तुरबा के साथ सात सुत्रों में बंधने की बात बेन किंग्सले ने जिस अंदाज में कही वो याद आती है। इस खास लम्हें में हमें किरदार के मानवीय पक्षों का पूरा विश्वास बन जाता है। कस्तुरबा के लिए एक पति की फिक्र अरसे बाद भी बरकरार नजर आती है। वहीं रोहिणी में भी पति के लिए कस्तुरबा जितना जीवन-संगिनी का भाव जिंदा है।

दशकों के महान विस्तार में डूबी इस फिल्म का शुमार दुनिया की महाकाव्यात्मक फिल्मों में किया जा सकता है। हजारों लोगों की कास्टिंग दशक युगीन विषय को भव्यता प्रदान करती है। आरंभ से लेकर अंतिम दृश्यों तक एक मानवीय धागा कहानी को संवेदना से समेटे हुए है। अटेनबरो की फिल्म का केनवास इतना भव्य है कि इसे फिर से करना किसी भी फिल्मकार के लिए एक बड़ा ख्वाब होगा। फिल्म का केनवस इसे 'लोरेंस आफ अरेबिया' समक्ष खड़ा कर गया। इससे गुजरते हुए डाक्टर झिवागो की भी याद आती है। कहना होगा कि 'गांधी' विश्व सिनेमा की सर्वकालिक फिल्मों की सभी मापदंडों को पूरा करती है। अतुलनीय केनवस को जीवंत करना हमेशा से असंभव के निकट रहा है। बापू को एक बार फिर जीवित देखने की कामना फिल्म को आकार दे गयी। महात्मा गांधी के जरिए भारत की कहानी बताने का संकल्प इसमें नजर आता है।

फिल्म का बनना एटनबरो की मुहब्बत की विजय भी थी। खुद के ड्रीम प्रोजेक्ट पर काम करना हमेशा कठिन हुआ करता है। फिल्म बनाने के लिए जरुरी संसाधन जुटाने के लिए उन्हें सालों संघर्ष करना पडा था। शीर्षक किरदार के लिए उपयुक्त अभिनेता चयन का सिलसिला भी मुश्किल गंभीरता की मांग करता था। काफी खोजबीन बाद बेन किंग्सले को महात्मा गांधी का ड्रीम रोल दिया गया। पूरी कहानी में अभिनेता ने किरदार को पूरी तरह अपना लिया था। किंग्सले में गांधी जी का पूरा अक्स देखने को मिला